इस्लाम में बीवी और शौहर के हुकूक़

आख़री क़िस्त

हुज्जतुल इस्लाम मोलाना मो0 सुहफी साहब
अनुवादक सै0 सुफ़यान अहमद नदवी

मग़रिब के फ़लसफ़ियों के नज़रियात की एक झलक देखिये :

समुईल इस्माईल्ज़ कहता है : "अगरचे मर्द की सिफ़ात और इम्तियाज़ात का ताल्लुक़ उसकी सोंच विचार से है और औरत के सिफ़ात और खुसुसियात का ताल्लुक़ उसके दिल से है लेकिन ज़रूरी है कि मर्द अपने दिल की तरबियत अपनी सोच बिचार की मानिन्द करे और औरत पर भी वाजिब है कि अपनी फ़िक्र की तरबियत अपने दिल की तरह करे। बदनियत और फ़ासिद दिल का मालिक मर्द एक जाहिल और मामूली औरत की तरफ़ एक मुहज़्ज़ब समाज में बे अहम्मियत होता है। जो औरत और मर्द सेहतमन्द और पाकीज़ा अख़लाक़ के मालिक बनना चाहें उन्हें चाहिए कि अपने तमाम फ़िक्री और अख़लाक़ी पहलुओं की तरबियत और परवरिश की कोशिश करें क्योंकि अगर मर्द शफ़क़त और दूसरों की हालत का एहसास करने से ख़ाली है तो वह एक हक़ीर, बे फ़ायदा और खुदग़र्ज़ हस्ती है और औरत चाहे कितनी ही ख़ूबसूरत हो अगर वह अक़्ल व होश न रखती हो तो वह एक ऐसी गुड़िया की तरह है जिसे लिबास पहना दिया गया हो। इसमें कोई शुब्हा नहीं कि औरत की खुसूसियात उसके दूसरों से मिलने–जुलने के मौक़े पर उसके जज़्बात और मुहब्बत के ज़रिये ज़ाहिर होती हैं।

औरत एक नर्स है जिसे बनी नौ इन्सान की परवरिश पर मुक़र्रर किया गया है और यही वजह है कि वह कमज़ोर और नातवाँ बच्चों की देखभाल करती और फ़ितरी रुजहान की बिना पर उन्हें मेहर व मुहब्बत की आग़ोश में पालती है। औरत घर की हिफ़ाज़त करने वाला फ़रिश्ता है और अपने हुस्ने सीरत और नेक किरदार की बदौलत ख़ानदान के लिए ऐसा आराम व आसानियाँ पैदा करती है जो अख़लाक़ और नेक ख़सलतों को कुव्वत बख़्शती है और उनकी परवरिश करती है। औरत फ़ितरतन और अपनी तबअी बनावट की वजह से शरीफ, मेहरबान, हौसलामन्द और ईसार पसन्द होती है और उसकी पुरमुहब्बत आँखों से उम्मीद और एतमाद का नूर झलकता है। यह नूर जहाँ कहीं चमके बेकसों को उम्मीद बख़्शता है और ग़मज़दा और मुसीबत के मारे लोगों को तसल्ली देता है।

समाज के हमेशा पाक व पाकीज़ा रहने के लिए ज़रूरी है कि मर्द और औरत की तरबियत के बीच बराबरी क़ायम रहे क्योंकि औरत की तहारत और पाकदामनी और मर्द की तहारत और तक़वा एक दूसरे के लिए लाज़िम व मलज़ूम है और दोनों पर अख़लाक़ी क़ानूनों का बराबर–बराबर इतलाक़ होता है इसलिए समाज अख़लाक़ी ऐबों से पाक रहना चाहे तो ज़रूरी है कि उसकी औरतें और मर्द परहेज़गार और अख़लाक़ी फ़ज़ीलत के हामिल हों और जो अमल ज़मीर और अख़लाक़ की तालीमात के ख़िलाफ़ हो, दोनों उससे परहेज़ करें और उसे ऐसा हलाक करने वाला ज़हर समझें जो एक बार बदन में दख़िल होकर फिर बाहर नहीं निकलेगा और उसके बुरे असरात आने वाली ज़िन्दगी की सआदत और ख़ुशबख़्ती को बरबाद कर देंगे।

मर्द के खुशगवार और आरामदेह ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए ज़रूरी है कि वह अपनी बीवी से रूहानी यकजहती रखता हो लेकिन औरत के लिए यह हरगिज़ मुनासिब नहीं है कि वह मर्द की ही बदली हुई शक्ल हो और हर बात में उसकी तक़लीद करे क्योंकि जिस तरह औरत यह नहीं चाहती कि उसके शौहर के अख़लाक़ और तरीक़े औरतों जैसे हों उसी तरह मर्द भी यह बात पसन्द नहीं करता कि उसकी बीवी की आदतें मर्दों जैसी हों।

औरत के फ़ज़ाएल और ख़ूबियाँ उसकी अक़्ल व फ़िक्र में नहीं बल्कि दिल और जज़्बात में हैं और मर्द उसकी अक़ल और मालूमात से नहीं बल्कि उसकी मेहरबानी और शफ़क़त से फ़ायदा उठाता है और लज़्ज़त हासिल करता है।

एलयोज़ विण्डल हिल्मज़ कहता हैः ''हम अक़्ली और फ़िक्री कुव्वतें रखने वाली औरत के मुक़ाबले में उस औरत की जानिब ज़ियादा मायल होते हैं जो मेहरबानी वाले जज़्बात की मालिक हो।

मर्द कभी–कभी अपने आपसे इस क़द्र बेज़ार हो जाते हैं कि वह उन तमाम सिफ़ात और ख़ुसूसियात की तारीफ़ करते हैं जो ख़ुद उनसे मुख़्तलिफ़ हों।''

वह यह भी कहता हैः ''अगर कोई शख़्स मुझसे अल्लाह तआला के लुत्फ़ व करम की दलील माँगे तो मैं उसका जवाब दूँगा कि अल्लाह की रहमत और इनायत की दलील हमारे हक़ में वह अजीब इख़्तेलाफ़ है जो मर्द और औरत के मिज़ाज की उफताद में पैदा किया गया है ताकि उसके ज़रिये उनका एक दूसरे से मिलजुलकर रहना मुमकिन हो सके।''

हेनरी तबीलोर कहता है : ''एक अच्छी औरत को ऐसी सिफ़ात और आदतों का मालिक होना चाहिए कि वह घर को मर्द के लिए राहत और आराम की जगह बना दे और यह मक़सद हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि औरत में इतनी क़ाबलियत हो कि मर्द को घर का इंतिज़ाम चलाने की ज़हमत से फ़ारिग़ कर दे और ख़ास तौर से उसे क़र्ज़े के ख़तरे से महफूज़ रखे। और औरत को चाहिए कि मर्द के सामने पसन्दीदा शक्ल में आए क्योंकि मर्द की पसन्द उसकी बातिनी तबीअत से पूरी तरह जुड़ी रहती है और इसके बिना कोई मुहब्बत भी पैदा नहीं हो सकती। एक ऐसी ज़िन्दगी में जिसके साथ तकलीफ़ें और दर्द भी जुड़े हुए हैं, अगर घर प्यार और मुहब्बत का मक़ाम न हो तो वह यक़ीनन आराम व राहत की जगह भी नहीं हो सकता। क्योंकि फ़िक्र व रूह की आराम सिर्फ मेहर व मुहब्बत के दामन में ही मुमकिन है।

मर्द अपनी बीवी से दिलरुबाई व बनाव सिंगार से ज़ियादा अक़्ल व होश, ख़ुश ख़ुर्रम तबीअत और रौशन ख़याली की उम्मीद रखता है और तल्ख़ व तेज़ इश्क़, जज़्बातीपन और सरकश एहसासात के मुक़ाबले में उसकी दिली मेहरबानी की तरफ़ ज़ियादा माएल होता है।

आरामदेह ज़िन्दगी बसर करने वाले लोगों का दस्तूरे ज़िन्दगी ''सब्र और शकेबाई'' होता है। यह ज़िन्दगी हुकूमत की तरह अपनी एक ख़ास सियासत रखती है और शादी शुदा शख़्स को ''कुछ लो कुछ दो'' के उसूल पर अमल करना पड़ता है। उसको बात माननी भी पड़ती है और मना भी करना पड़ता है। उसे सब्र और हौसले से काम लेना पड़ता है। इन्सान के लिए यह लाज़िम नहीं कि दूसरों के एहसासात के मामले में अन्धा बन जाए और उन्हें न देखे। इसके उलट ज़रूरी है कि वह माफ़ करने और आँख बचाने की ताक़त रखता हो और जो कुछ देखे उसे नर्मी और मेहरबानी से बर्दाश्त करे।

शदीशुदा ज़िन्दगी में तमाम सिफ़ात और आदात में से मियाना रवी सबसे ज़ियादा मुफ़ीद, ज़रूरी और देर तक रहने वाली होती है और अगर यह पसन्दीदा ख़सलत ख़ुद्दारी से जुड़ी हो तो इन्सान को हौसले और नर्मी का आदी बना देती है और वह इस बात का आदी हो जाता है कि सख़्तियों और ख़िलाफ़े मिज़ाज बातों के मुक़ाबले में हौसले से काम ले और अगर कोई सख़्त अलफ़ाज़ सुने तो जवाब न दे और चुपचाप बैठा रहे यहाँ तक कि दूसरे फ़रीक़ का गुस्सा ठण्डा पड़ जाए।

यह जो कहा गया है कि नर्म जवाब गुस्से के शोले को बुझा देता है, इसका इतलाक़ सबसे ज़ियादा शादीशुदा ज़िन्दगी पर होता है।

अंग्रेज़ी की मशहूर कहावत है कि "लड़कियाँ जाल बनाने में महारत रखती हैं लेकिन उनकी बेहतरी इसमें है कि पिंजरा बनाने का तरीक़ा सीखें"

मर्दों को आमतौर से परिन्दों की तरह जाल में आसानी से फंसाया जा सकता है लेकिन परिन्दों ही की तरह उनकी देखभाल भी बेहद मुश्किल और परेशानी वाली है। अगर औरत अपने घर को यूँ न संवार सके कि वह मर्द के लिए सबसे ज़ियादा सजी हुई और ख़ुशहाल जगह साबित हो और मर्द दिनभर की मेहनत के बाद ख़ुश–ख़ुश वहाँ जाने पर आमादा हो तो उस बदनसीब मर्द की हालत पर आँसू बहाने चाहियें और हक़ीक़त में उसे एक बेघर शख़्स समझना चाहिए। कोई अक़्लमन्द शख़्स सिर्फ औरत के हुस्न व जमाल की ख़ातिर उससे रिश्त–ए–इज़दिवाज क़ायम नहीं करता। यह ठीक है कि शुरु–शुरु में औरत की ख़ूबसूरती मर्द को उस पर लुभाने में बड़ा असरदार ज़रिया होती है लेकिन बाद में उसकी ज़िन्दगी में कोई ख़ास असर डालने वाली नहीं होती है। बेशक हमारा यह मक़सद नहीं कि ख़ूबसूरती की बुराई करें या उसकी क़द्र व क़ीमत को घटाने की कोशिश करें क्योंकि चेहरे और जिस्म की ख़ूबसूरती आम तौर से सेहतमन्द मिज़ाज की अलामत होती है। अस्ल में जो बात हम कहना चाहते हैं वह यह है कि एक ऐसी हसीन व जमील औरत से शादी करना जो अख़लाक़ी और रूहानी ख़ूबियों से ख़ाली हो, एक बहुत बड़ी ग़लती है जिसकी तलाफ़ी हरगिज़ मुमकिन नहीं।

दिख़ावटी ख़ूबसूरती एक न एक दिन मुरझा जाती है और उसकी कोई क़द्र व क़ीमत नहीं रहती। इसके उलट मानवी हुस्न और ख़ूबी हर सूरत में हमेशा शादाब और दिलकश रहती और जैसे–जैसे वक़्त गुज़रता है उसकी रोनक़ और दिलफ़रेबी घटने के बजाए बढ़ती रहती है। शादी हुए जब एक साल गुज़र जाता है तो मर्द और औरत में से कोई भी एक–दूसरे के हुस्ने सूरत के बारे में नहीं सोंचता बल्कि इसके उलट दोनों एक दूसरे के अख़लाक़ और तौर तरीक़ों पर ध्यान देते है।"

दोतो कोपल कहता है : "मर्द को अपनी ज़िन्दगी में एक नेक सीरत और बाअख़लाक़ बीवी से बढकर कोई सहारा नहीं मिल सकता। मैंने अपनी ज़िन्दगी में ऐसे कमज़ोर और मजबूर लोग भी देखे हैं जिन्होंने साथ मिलकर बड़े अज़ीम कारनामे अन्जाम दिये हैं और इसकी वजह भी यही थी कि उनकी बीवियाँ लाएक़ और बाअख़लाक़ थीं जिन्होंने बीवी की ज़िम्मेदारियाँ अन्जाम देते वक़्त अपने शौहरों की रूहानी मदद की और उन्हें ग़लतियों से महफ़ूज़ रखा।"

जो कुछ अब तक बयान किया गया वह बीवी और शौहर के हुक़ूक़ के बारे में इस्लामी तालीमात का एक नमूना था। अब बहस के ख़ातमे पर हम बीवियों और शौहरों के कुछ हुक़ूक़

की फ़ेहरिस्त देते हैं और उनकी तफ़सील और एक दूसरे के हुकूक़ का ज़िक्र मुफ़स्सल किताबों पर छोड़ देते हैं :

➢ शौहर पर वाजिब है कि अपनी बीवी को जाने पहचाने मेयार के मुताबिक़ ख़र्च मुहैय्या करे। उन ख़र्चों में लिबास, खाना, घर का साज़ो सामान, ख़िदमतगार और दूसरी तमाम ज़रूरियाते ज़िन्दगी शामिल हैं जो औरत को उसकी हैसियत के मुताबिक़ दी जानी चाहियें।

➢ ज़रूरियाते ज़िन्दगी मुहैय्या करने में बीवी को तकलीफ़ और परेशानी में न डाले और आराम व आसानी के रास्ते उसे फ़राहम करे।

➢ बीवी की इज़्ज़त व एहतेराम करे और उसे दुख न दे।

➢ बीवी को ऐसे काम करने को न कहे जो उसके लिए मुनासिब और उसकी शान के मुताबिक़ न हों जैसे तिजारत, खेती वग़ैरा बल्कि घर के काम जैसे कपड़े धोने, खाना पकाने और बच्चों को साफ़ सुथरा रखने की ज़िम्मेदारी भी उस पर न डाले लेकिन औरत के लिए मुस्तहब है कि घर के काम और शौहर व औलाद से मुताल्लिक़ ख़िदमत अन्जाम दे।

➢ बीवी की ग़लतियों और कोताहियों को नज़रअन्दाज़ करे और उसे माफ़ कर दे और उसकी बद अख़लाक़ियों पर (अगर वह कभी–कभी बद अख़लाक़ी का से पेश आए) सब्र से काम ले और बिला वजह उसकी तरफ से बदगुमानी का इज़हार न करे।

➢ अपने जिस्म और लिबास की पाकी का ख़याल रखे।

➢ बात चीत के दौरान अच्छी बातें करे और सवालात के अच्छे जवाब दे।

➢ बीवी को अच्छाइयों का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके।

➢ अगर बीवी, बेटी को जन्म दे तो उसके साथ बद अख़लाक़ी से पेश न आए और तक़दीरे इलाही को उससे न जोड़े।

➢ उससे किनारा कशी न करे।

➢ बीवी पर वाजिब है कि शौहर से बद अख़लाक़ी न करे और गुस्से, कड़वेपन और बदज़बानी से उसे दुख न दे।

➢ बीवी के लिए मुस्तहब है कि काम–काज में शौहर की मदद करे और ख़ास कर घर के मामले और खाना तैयार करने वग़ैरा की ज़िम्मेदारियाँ संभाल ले।

➢ शौहर को अज़ीज़ रखे और उसकी इज़्ज़त व एहतेराम में कमी न करे।

➢ शौहर के सिवा किसी और के लिए बनाव सिंगार न करे।

➢ शौहर की इजाज़त के बिना उसका माल सदक़े और सिला रहमी के तौर पर भी न ख़र्च करे।

➢ शौहर की मौजूदगी और ग़ैर मौजूदगी में उसकी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करे।

औरत और मर्द के इन उसूल पर कारबन्द होने से उनकी ज़िन्दगी ख़ुशहाल हो जाती है और उनके घर की ख़ुशबख़्ती में कोई रुकावट नहीं पड़ती।

तजुर्बे से यह साबित हो गया कि तक़रीबन तमाम की तमाम जुदाइयों और ख़ानदान की परेशानियों की वजह यह होती है कि औरत और मर्द अपनी ज़िम्मेदारियों को नहीं समझते या उनको अन्जाम देने से जी चुराते हैं।

बाईमान औरतें और मर्द जो अपने आप को अहकामे ख़ुदावन्दी अन्जाम देने के क़ाबिल समझते हैं वह उन पर बिना किसी सवाल व जवाब के अमल करते हैं और नतीजे के तौर पर दुनिया और आख़रत की ख़ुशी से फ़ायदा उठाते हैं। □□□